>

Title: Need to provide due importance to the use of official language "Hindi" while organizing Commonwealth Games in the country.

**श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ):** सभापति जी, आपका बहुत-बहुत आभार कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन होने जा रहा है। उसमें क्या समस्याएं हैं, क्या अनियमितताएं हैं, उसकी चर्चा करना मेरा आज का विषय नहीं है।

मैं यह मानता हूं कि यह बहुत बड़ा आयोजन है। हमारी प्रतिष्ठा से, हमारे स्वाभिमान से जुड़ा हुआ है, लेकिन मुझे बड़ा दुख इस बात को कहते हुए हो रहा है कि बड़े खुले हाथ से खर्चा होने के बाद भी सारे आयोजन के अन्दर कहीं भी हिन्दी दिखाई नहीं देती। यह देश की प्रतिष्ठा की बात है, परन्तु देश की भाषा कहीं उसमें दिखाई न दे तो मैं समझ नहीं पाता हूं कि किस प्रकार से हमारे देश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप दिल्ली में कहीं भी जायें तो हिन्दी की दुर्दशा है। आप यदि किसी सर्किल से गुजरें तो बाईं तरफ से आप जाएंगे तो अकबर रोड, मोतीलाल नेहरू रोड के बोर्ड आपको अंग्रेजी में दिखाई देंगे और जब दिशा परिवर्तित करके उल्टे हाथ से आएंगे, गलत दिशा से आएंगे तो आपको उधर हिन्दी दिखाई देगी, यानि हिन्दी को उन्होंने रोंग साइड पर रख दिया है, यह स्थिति दिखाई दे रही है। ...(व्यवधान)

दुनिया भर के देशों में आयोजन होते हैं, बड़े आयोजन होते हैं, खेलों के आयोजन होते हैं, अन्य आयोजन होते हैं तो सब देश अपनी भाषा का बड़े गर्व के साथ, बड़े अभिमान के साथ प्रयोग करते हैं। अभी चीन में ओलम्पिक हुए, हम सब कार्यक्रमों में देखते थे तो चीनी भाषा हमें दिखाई देती थी, अंग्रेजी नहीं दिखाई देती थी, लेकिन यहां पर ऐसा लगता है कि अंग्रेज तो भले ही चले गये पर अंग्रेजी राज यथावत् बना हुआ है। अभी दो दिन पहले यह पुस्तिका हमको मिली है। मैं समझता हूं कि सभी माननीय सांसदों के यहां गई होगी, 'Seventy Five Days to Go: An Overview' इसके अन्दर एक भी शब्द हमको हिन्दी का दिखाई नहीं देता है। पूरा विवरण, किस प्रकार से खेलों का आयोजन हो रहा है, क्या इसकी तैयारियां हो रही हैं, इसमें शेरा का जिक्र है, इसके अंदर खेल ग्राम का जिक्र है, पर हिंदी नहीं है, अंग्रेजी में ही सारा विवरण है। मुझे आशंका है और चिंता भी है। ...(व्यवधान)

**श्री दारा सिंह चौहान (घोसी) :** यह देश का दुर्भाग्य है।

**श्री राजेन्द्र अग्रवाल :** मेरे कहने का मतलब है कि हिंदी की इस प्रकार की उपेक्षा से हम किस प्रकार का चित्र बनाने वाले हैं? यहां अंग्रेजी का उपयोग करके हम उन्हें क्या दिखाने वाले हैं? आपके माध्यम से मेरी प्रार्थना है कि सरकार हस्तक्षेप करे, हिंदी को समुचित गौरव प्रदान किया जाए, हिंदी में नामपट्ट हों, सूचनापट्ट हों, निमंत्रण पत्र हों या अन्य सामग्री हों, उनके अंदर हिन्दी को समुचित स्थान दिया जाए। यह बात सुनिश्चित की जाए कि प्रधानमंत्री जी, राष्ट्रपति जी या अन्य जो हमारे बड़े नेता हैं, राजनेता हैं, उनके भाषण मुख्य रूप से हिंदी में हों चाहे उनका अनुवाद दूसरी भाषा में भले ही हो। उद्घाटन भाषण और समापन भाषण हिंदी में हों, क्योंकि अगर हिंदी का सम्मान होगा तभी देश का सम्मान होगा। हिंदी देश के सम्मान से जुड़ी हुयी है। इतना ही निवेदन करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

**सभापति महोदय :**

श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी,

श्री वीरेन्द्र कुमार,

श्रीमती बोचा झांसी लक्ष्मी,

श्री अशोक कुमार रावत, और

श्री दारा सिंह चौहान जी अपने को राजेन्द्र अग्रवाल जी के विषय के साथ सम्बद्ध करते हैं।